© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 02 | 27 | April - June 2016

उज्जयिनी की स्त्रियों में विशिष्ट मनोभाव

डॉ0 राजबीर, विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजीव गाँधी महाविद्यालय, उचाना (जीन्द)

प्राचीन काल में अवन्ती देश की राजधानी उज्जयिनी थी। इसका वर्णन नासिक पर्वत की गुफाओं के शिला–लेखों में है। उज्जयिनी शिप्रा नदी के किनारे पर स्थित है और यहाँ महाकाल (शिव) का मन्दिर है। यहाँ बहुत से लोग यात्रा के लिए आया करते हैं। यह एक धार्मिक स्थान है। उज्जयिनी को ही अवन्तिका, विशाला और पुष्पकरण्डिनी भी कहते हैं।

मेघूदत में वर्णित उज्जयिनी की वेश्याएँ–स्त्रियाँ भी धार्मिक कार्यों में भाग लेती थी, तो गृहिणीयों का तो कहना ही क्या ?

उज्जयिनी पहुँचने से पहले मेघ ने यात्रा–मार्ग में जो देखा वह भी सुन्दर था, मधुर था, उसका भी अपना आकर्षण था, किन्तु यह सब किसी विदग्ध 'कामरूप' नागरिक को आकर्षित करने के लिए काफी न था। अब तक मिलीं भी तो कौन ? 'मुग्ध सिद्धाङ्गनाएँ', 'भ्रूविलासानाभिज्ञ जनपदवधुएँ', या धूप से मुरझाये मुखों वाली पुष्पलावियाँ', जिनमें सौन्दर्य तो है पर न विभ्रम है, न विलास। उसे तो आदत है भौंहों की मटक, कमर की लचक और मेखला की छनक की, अतः उसे इन्हें पाने के लिए अर्थात् ऐसा दृश्य देखने के लिए नगरों में प्रसिद्ध नगरी, स्वर्ग के कान्तिमान खण्ड, उज्जयिनी जाना ही होगा। रास्ता यदि थोड़ा दूर भी हो जाये तो कोई बात नहीं। कम से कम नेत्र निर्वाण तो प्राप्त होगा ही।[1]

'उदयनकथा–कोविदग्राम–वृद्धान्' अर्थात् जहाँ के गाँवों के वृद्ध उदयन राजा की कथाओं के जानकार हैं।[1] जहाँ के वृद्ध लोग उदयन आदि राजाओं की कथा के जानकार हैं, स्वाभाविक है वहाँ कि स्त्रियाँ भी अपने इतिहास की कथाओं को सुनने वाली व जानने वाली होगी अर्थात् उज्जयिनी की स्त्रियाँ प्राचीन कथाओं की जानकार थी।

यदि वहाँ की स्त्रियाँ को किसी प्रकार सन्देह हो जाता है कि उनका पति (प्रेमी) किसी पराई स्त्री से मेल–मिलाप करके आया है, तो वे ईर्ष्या और द्वेष जैसे भावों में भर जाती हैं–

''यत्र स्त्रीणां हरति सुरतग्लानिमङ्गानुकूलः।
शिप्रावातः प्रियतम इव प्रार्थनाचाटुकारः।।''[2]

(रति की याचना में चिकनी–चुपड़ी बातें बनाने वाले प्रेमी की तरह स्त्रियों की रति से पैदा हुई थकावट को दूर करता है।)

1. मेघदूत : एक मनोविश्लेषण, डॉ0 देवीदत्त शर्मा, पृ. 50.
2. मेघूदत, पू.मे. 30.

उज्जयिनी की राजघरों की स्त्रियाँ भी कुछ कम नहीं है, वह अपने स्वामी के लिए अर्थात् पतिव्रता धर्म के लिए बड़ी से बड़ी समस्या का सामना करने के लिए तैयार रहती है और वे एक सच्ची प्रेमी का भी हैं–

'प्रद्योतस्य प्रियदुहितरं वत्सराजोऽत्र जह्ने।'[1]

(यहाँ पर वत्सराज (उदयन) ने उज्जयिनी के महाराज प्रद्योत की प्रिय पुत्री वासवदत्ता का अपहरण किया था।)

वासवदत्ता उदयन के प्रेमपाश में बन्धकर अपने सम्बन्धियों को छोड़कर भाग जाती है। उसकी सुन्दरता और गुणों में कोई सन्देह हो ही नहीं सकता था क्योंकि उदयन जैसा राजकुमार उस पर इतना आसक्त था कि उसकी मृत्यु के पश्चात् भी उसे नहीं भूल सकता। बल्कि वह तो कहता है :–

''अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम्।
इदं च मुखमाधुर्य वथं दूषितमग्निना।''

परन्तु शारीरिक सुन्दरता से बढ़कर वासवदत्ता की महत्ता उसके आत्मत्याग में है। पति की भविष्यत् उन्नति तथा देश के कल्याण के लिए वह अपने प्रिय पति से वियोग को भी स्वीकार कर लेती है। इस महात्याग के कारण वह भारतीय सती शिरोमणि सीता, सावित्री, दमयन्ती तथा शकुन्तला के साथ गिनने योग्य है।[2]

उज्जयिनी की इस राजकुमारी (स्त्री–पात्र) को यदि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखते हैं तो यह केवल अपने मन (संवेगों) की बात सुनती है। उदयन से प्रेम होने के बाद यह अपने मनोगत भावों को जानकर अपने माता–पिता को भी त्याग कर अपने प्रेमी के साथ जाती है, जब राज्य (देश) के संकट की बात आती है, तो वह राज्य की रक्षा के लिए अपने पति विरह को चुनती है अर्थात् स्वीकार करती है। उज्जयिनी की राजकुमारी के भावों को देखकर इसका स्थान सती–साध्वी स्त्रियों में आता है।

उज्जयिनी की स्त्रियाँ अपने केशों में तेल आदि लगाने के लिए अपने घर की खिड़कियों या प्रसादों पर आ जाती है और कामिनियों के केशों को बिखेरने वाला दृश्य अद्भुत है 'जालोद्गीर्णैरूपचितवपुः केशसंस्कारधूपैः' उनके महावर लगे चरणों से रञ्जितअटारियाँ 'लक्ष्मी पश्यँल्ललितवनितापादरागाङ्कितेषु'[3] वहाँ की स्त्रियों की जलक्रीड़ा 'तोयक्रीडानिरतयुवति'।[4] वहाँ की स्त्रियाँ जब गन्धवती नदी में स्नान करती है, तो उनके शरीर पर लगे हुए चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों से उस नदी का जल भी सुगन्ध वाला हो जाता है।

महाकवि कालिदास महाकाल के मन्दिर का वर्णन व दृश्य दिखाने के लिए यक्ष के मुख से मेघ को महाकाल मन्दिर की सन्ध्याकालीन–कीर्तन अथवा आरती में भेजता है :–

1. मेघूदत, पू.मे. 30.
2. वही, 31.
3. मेघदूत, पू. मे. (चन्द्रकलाव्याख्योपेतम्) 1. पृ. 72.
4. स्वप्नवासवदत्तम् (भूमिका) पृ. 29.

'पादन्यासैः क्वणितरशनास्तत्र लीलावधूतै–
रत्नच्छायाखचितबलिभिश्चामरैः क्लान्तहस्ताः।
वेश्यास्त्वत्तो नखपदसुखान्प्राप्य वर्षाग्रबिन्दू–
नामोक्ष्यन्ते त्वयिमधुकरश्रेणिदीर्घान्कटाक्षान्।।'[1]

सायंकालीन सन्ध्या के समय महाकाल मन्दिर में जब पूजा होती है, तो उज्जयिनी नगरी की वारवनिताएँ नृत्य करती है, उस भजन (कीर्तन) संध्या में, उनकी करधनी के धुँघरूओं की छमाछम होती हैं और जिनके हाथ (कड़ों के) रत्नों की कान्ति से विभूषित हत्थियों वाले, विलास–पूर्वक डुलाए गए चवरों से थक जाते हैं, ऐसे थके हुए क्षणों में जब उनके नखक्षतों पर मेघ की ठंडी–ठंडी बूँदें पड़ती है, तो वे भौंरो की कतार सी दीर्घ अपनी चितवनों से उसे प्यार पूर्वक देखती है, इसी प्रकार से वहाँ की वेश्याएँ भी धार्मिक कार्यो में अपना पूर्ण योगदान देती है। उनकी मानसिकता में भक्ति के भाव बसे हुए हैं।

उज्जयिनी की स्त्रियों में भय (डर) की भावना–

''गच्छन्तीनां रमणवसतिं योषितां तत्र नक्तं–
रूद्धालोके नरपतिपथे सूचिभेद्यैस्तमोभिः।
सौदामन्या कनकनिकषस्निग्धया दर्शयोर्वीं
तोयोत्सर्गस्तनितमुखरो मा स्म भूर्विक्लवास्ताः।।''[2]

उज्जयिनी में जब अभिसारिकाएँ (स्त्रियाँ) अपने प्रेमी से मिलने जाती है, तब वे कोई देखना ले, माता आदि के डर से अँधरे में छुपकर जाती है, अर्थात् उस समय उनकी मानसिकता में पूरा भय भाव होता है, तभी तो यक्ष ने मेघ को कहा था। बिजली से बस मार्ग दिखाना बारिश एवं गरजने का शब्द मत करना। क्योंकि कवियों ने अभिसारिकाओं को बिजली के प्रकाश में रात को अपना रास्ता खोजने वाली बताया है–

सुतीक्ष्णमुच्चैर्ध्वनतां पयोमुचां घनान्धकारावृतशर्वरीष्वपि।
तडित्प्रभादर्शितमार्गभूमयः प्रयान्ति रागादभिसारिकाः स्त्रियः।।[3]

महाकाल मन्दिर के समीप जिन स्त्रियों के भवन हैं, वे पूरे मास चाँदनी का आनन्द लेती हैं–

'असौ महाकालनिकेतनस्य वसन्नदूरे किल चन्द्रमौलेः।
तामिस्त्रपक्षेऽपि सह प्रियाभिर्ज्योत्स्नावतो निर्विशति प्रदोषान्।।'[4]

चन्द्रमा को अपने सिर पर स्थान देने वाले महाकाल मन्दिर के पास जिन स्त्रियों या पुरुषों का भवन है वे कृष्ण पक्ष (अँधेरे) में भी अपने पतियों के साथ रति क्रीड़ा आदि कार्य का आनन्द ले सकती हैं क्योंकि कृष्ण पक्ष में भी वहाँ चन्द्रमा की चाँदनी रहती है।

इस प्रकार से कवि कालिदास ने यक्ष के सन्देश के माध्यम से मेघ को भी उज्जयिनी की स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के चरित्र और उनके मनोभाव (Emotion) से परिचित करवाया है।

1. मेघदूत, पू. मे. 32.
2. मेघूदत, पू. मे. 35.
3. ऋतुसंहार, 2.10
4. रघुवंश, 6.34

सहायक ग्रन्थ सूची

1.	ऋतुसंहार	:	रांगेय राघव, प्रकाशन आत्माराम एण्ड संस कश्मीरी गेट, दिल्ली–110006.
2.	मेघदूत	:	रमाशंकर त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, (1981)
3.	मेघदूत	:	डॉ0 संसारचन्द्र तथा मोहनदेव पन्त शास्त्री, प्रैस मुख्यकार्यालय बंगलो रोड़, जवाहरनगर दिल्ली, (1983)
4.	मेघदूत : एक अनुचिन्तन	:	डॉ0 रंजन् सूरिदेव, नागरी प्रकाशन, पटना, (1960)
5.	मेघदूत : एक विश्लेषण	:	डॉ0 देवीदत्त शर्मा, प्रकाशक देववाणी–परिषद्, दिल्ली, प्रथम संस्करण– (1981)
6.	रघुवंश	:	इन्द्र विद्यावाचस्पति, प्रकाशक राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, तृतीय संस्करण– (1960)

7. रघुवंश : डॉ0 कृष्णमणि त्रिपाठी, प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली– 110007.

8. स्वप्नवासवदत्तम् : व्या. मदनन्तराम शास्त्री वेताल, प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी, षष्ठ संस्करण–सम्वत् 2017 वि. (1960)